ROJGAR WITH ANKIT

DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत — संज्ञा प्रकरण

Demo-02

अ इ उ ऋ | ऌ | ए ओ ऐ औ

- अ इ उ ऋ → 18 भेद
- ऌ → 12 भेद (दीर्घाभाव)
- ए ओ ऐ औ → 12 भेद (ह्रस्वाभाव)

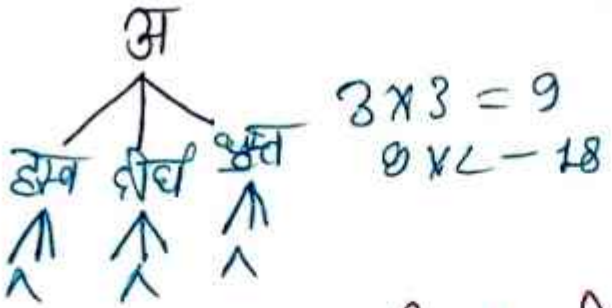

अ → ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत

$3 \times 3 = 9$

$9 \times 2 - 18$

सवर्ण संज्ञा विधायक

⇒ तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम्

तालु आदि स्थान और आभ्यन्तर प्रयत्न ये दो जिस वर्ण का जिस वर्ण के साथ तुल्य हों वे वर्ण आपस में सवर्णसंज्ञक होते हैं।

इत् संज्ञा = विधायक सूत्र

उच्चारण स्थान

अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः।
इचुयशानां तालु।
ऌतुलसानां दन्ताः।
ऋटुरषाणां मूर्धा।
उपूपध्मानीयानामोष्ठौ।
ञमङणनानां नासिक च।
एदैतोः कण्ठतालु।
ओदौतोः कण्ठोष्ठम्।
वकारस्य दन्तोष्ठम्।
जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलम्।
नासिकाऽनुस्वारस्य।

प्रयत्नाः (5)

⇒ यत्नो द्विधा – आभ्यन्तरो बाह्यश्च। [11]
आद्यः पञ्चधा – स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृतसंवृत– भेदात्।
✓ तत्र स्पृष्टं प्रयत्नं स्पर्शानाम्।
✓ ईषत्स्पृष्टमन्तः स्थानाम्।
✓ ईषद्विवृतमूष्मणम्।
✓ विवृतं स्वराणाम्।
✓ ह्रस्वस्यावर्णस्य प्रयोग संवृतम्। प्रक्रियादशायां – तु विवृतमेव।

प्रयत्न

- आभ्यन्तर (5)
- बाह्य

थोड़ा (स्पृष्ट) → स्पर्श (क से म) (25)

ईषत् स्पृष्ट :- (अंत:स्थ) य् व् र् ल् (यण्)

ईषत् विवृत - (ऊष्म) श् ष् स् (शल्)

विवृत [अच्] (स्वर)

संवृत ह्रस्व अ

बाह्यप्रयत्नस्त्वेकादशधा - (1) विवार: (2) संवार: - (3) श्वासो (4) नादो (5) घोषो (6) ऽघोषो (7) ऽल्पप्राणो (8) महाप्राण - (9) उदात्तो (10) ऽनुदात्त: (11) स्वरितश्चेति ।

✓ खरो विवारा: श्वासा अघोषाश्च ।

✓ हश: संवारा नादा घोषाश्च ।

✓ वर्गाणां प्रथमतृतीयपञ्चमा यणश्चाल्पप्राणा: ।

✓ वर्गाणां द्वितीयचतुर्थौ शलश्च महाप्राणा: ।

✓ उदात्तोऽनुदात्त: स्वरितश्चेति ।

बाह्य प्रयत्न

विवार श्वास-अघोष (खर) 13वर्ण	संवार नाद घोष (हश्) (20वर्ण)	(19) अल्पप्राण	(14) महाप्राण	उदात्त अनुदात्त स्वरित
1,2+श्,ष,स	3,4,5+यण+ह	1,3,5+यण	2,4+शल	स्वर
क् ख्	ग् घ् ङ्	क् ग् ङ्	ख् घ्	
च् छ्	ज् झ् ञ्	च् ज् ञ्		
ट् ठ्	ड् ढ् ण्			
त् थ्	द् ध् न्			
प् फ्	ब् भ् म्			

यत्नो द्विधा – आभ्यन्तरो बाह्यश्च । प्रयत्न दो प्रकार के हैं – एक आभ्यन्तर-प्रयत्न और दूसरा बाह्य-प्रयत्न ।

आद्य: पञ्चधा – स्पृष्टेषत्स्पृष्टेषद्विवृतविवृत-संवृत भेदात् । पहला आभ्यन्तर-प्रयत्न स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, ईषद्विवृत, विवृत और संवृत के भेद से पाँच प्रकार का है।

स्पर्शसंज्ञक (क से म तक के वर्णों का स्पृष्ट-प्रयत्न है)

अन्तःस्थसंज्ञक (यण् प्रत्याहार य् व् र् ल्) वर्णों का ईषत्स्पृष्ट-प्रयत्न है।

ऊष्मसंज्ञक (शल अर्थात् श् ष् स्) वर्णों का – ईषद्विवृत प्रयत्न है।

स्वरसंज्ञक (अच्) वर्णों का विवृत-प्रयत्न है।

ह्रस्व अवर्ण का उच्चारणावस्था में संवृत - प्रयत्न और प्रयोगावस्था की अवस्था में विवृत प्रयत्न ही रहता है।

बाह्यप्रयत्न

विवार: संवार: श्वासो नादो घोषोऽघोषोऽल्पप्राणो- महाप्राण उदात्तोऽनुदात्त: स्वरितश्चेति।

विवार, संवार, श्वास, नाद घोष, अघोष, अल्पप्राण, महाप्राण, उदात्त, अनुदात्त और स्वरित के भेद बाह्यप्रयत्न ग्यारह प्रकार का होता है।

सवर्ण

उच्चारण स्थान → प्रयत्न

क घ — अ आ

कण्ठ कण्ठ — च क — कण्ठ

स्पृष्ट स्पृष्ट — तालु — इनमें समानता नहीं है

ऋ ऌ क्या ये सवर्ण है?

मूर्धा दन्त्य

विवृत

वार्तिकम् ऋलृ वर्णयोर्मिथः सावर्ण्यं वाच्यम्

ऋ और लृ वर्ण की आपस में सवर्णसंज्ञा होती है, ऐसा कहना चाहिए।

अणुदित्सवर्णस्य चाप्रत्ययः

अप्रत्यय अण् और उदित् ये सवर्ण के बोधक अर्थात ग्राहक होते हैं। कु, चु, टु, तु, पु ये ही उदित् हैं, क्योंकि इन पाँचों की ही प्राचीन आचार्यों ने उदित् संज्ञा की है।

कु = क् ख् ग् घ् ङ्

पाण्डु + अण् = पाण्डव

कुरु + अण् = कौर

अइउण्, ऋलृक्, एओङ्, ऐऔच्, हयवरट्, लण्

जिस सूत्र में अणु विधीयमान अर्थात् विधेय नहीं है, वहाँ एक अणु प्रत्याहार के वर्ण से उसके अन्य सवर्णी वर्णों का ग्रहण किया जाता है। जैसे इको यणचि में इक् प्रत्याहार से केवल इ, उ, ऋ और लृ ही नहीं लिए जाते अपितु ई, ऊ, ॠ आदि दीर्घ प्लुत, उदात्त, अनुदात्त स्वरित अनुनासिक अननुनासिक आदि सभी अठारह भेदों का ग्रहण किया जाता है। तात्पर्य यह है कि भिन्न-भिन्न वर्णों की आपस में तुल्यास्यप्रयत्न सवर्णम् से सवर्णसंज्ञा हुई है।

वे यदि अण प्रत्याहार में आते हैं तो वे अपने सवर्णियों के ग्राहक अर्थात बोधक होते हैं। एक के ग्रहण से इसरे का ग्रहण होजाता है। यह नियम अण् के लिए है। शेष वर्णों में उदित होना जरूरी है तभी स्वर्ण का ग्रहण किया जायेगा।

तात्पर्य यह है कि इस सूत्र में कथित अण् से अ, इ, उ, ऋ, ऌ, ए, ओ, ऐ, औ, ह, य, व, र, ल का बोध होता है और अन्यत्र अण् से अ, इ, उ का मात्र बोध होता है।

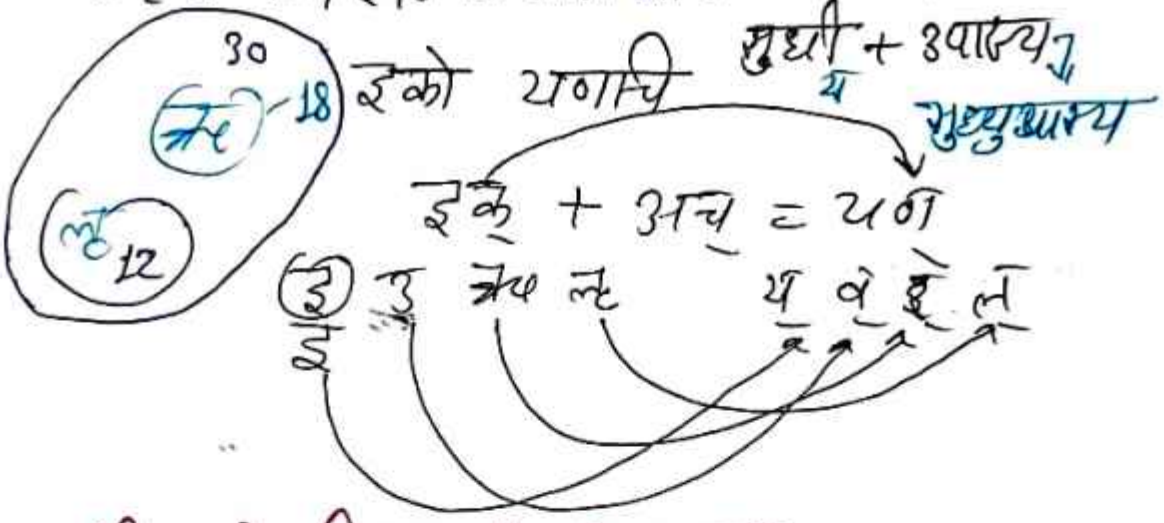

संहितासंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम

परः सन्निकर्षः संहिता

वर्णानामतिशयितः सन्निधिः संहितासंज्ञः स्यात्।

वर्णों की अत्यन्त सन्निधि संहितासंज्ञक होती है अर्थात वर्णों की अत्यन्त समीपता को संहिता कहते हैं।